LATE D.B.T. GOVT. COLLEGE GURUR

तीन दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण सत्र– 2025–26

SUBMITTED BY

DURGESHNANDANI, KESHLATA, MANISHA, REENA,

GEETIKA, BHARTI, VARTIKA

तीन दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण

सत्र – 2025–26

- **भ्रमण स्थल–** **विशाखापट्टनम**
- **शैक्षणिक भ्रमण का दिन–** बुधवार से रविवार
- **शैक्षणिक भ्रमण का दिनांक–** 12/11/2025–16/11/2025
- **शैक्षणिक भ्रमण का माह–** नवम्बर
- **शैक्षणिक भ्रमण में सम्मिलित कुल छात्र–छात्राओं की संख्या–**22

  (BSc. Maths 3rd Year)

- **शैक्षणिक भ्रमण में सम्मिलित प्राध्यापक–**
  1. Prof. L. HIRWANI SIR (PHYSICS)
  2. Prof. D.K. RATRE SIR (MATHS)
  3. Lect. TEENA DEWANGAN (DCA)
- **शैक्षणिक भ्रमण का चयनित स्थान–**
  1. **प्रथम दिवसः–** R.K. Beach, TU142 Aircraft Museum, Kursura Submarine Museum, UH3H Museum, Sea Harrier Museum.

  2. **द्वितीय दिवसः–** Kailash giri, Telugu Saamskritika Nikethanam, Tenneti park, Panduranga swamy Temple.

  3. **तृतीय दिवसः–** Indira Gandhi Zoological Park Vishakhapatnam, Simhachalam Temple.

<u>शैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्यः—</u>

- **वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञानः—** पनडुब्बी संग्रहालय, नेवल संग्रहालय और अन्य वैज्ञानिक संस्थानों का अवलोकन।
- **ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक समझः—** स्थानीय संस्कृति, परंपराएं, कला, भाषा और ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी प्राप्त करना।
- **रक्षा क्षेत्र की जानकारीः—** नौसेना से जुड़े संस्थानों व संग्रहालय का अवलोकन।
- **वन्य जीवों की जानकारीः—** विभिन्न जानवरों, पक्षियों और उनकी प्रजातियों का ज्ञान।
- छात्र—छात्राओं में स्वयं अवलोकन एवं निरीक्षण करने की दशा का विकास करना

टीप :— दिनांक 12 से 14 नवम्बर 2025 का विवरण प्रारंभिक दो ग्रुप द्वारा किया गया है।

अंतिम दिवस (दिनांक 15/11/2025) का विवरणः–

❖ **समुद्र तट भ्रमणः–** हमारी यात्रा के अंतिम दिवस को हम सभी सुबह 8:00 बजे समुद्र तट पहुंचे। वहां हमने उगते हुये सूरज का सुंदर दृश्य देखा। समुद्र की लहरें, ठंडी हवा और साफ वातावरण बहुत मनमोहक था। दूर तक फैला समुद्र, रेत और उठती लहरें सभी को आकर्षित कर रही थी। हमने समुद्र लहरों को नजदीक से देखा, शंख और सीपियाँ एकत्र कीं। कुछ समय तक समुद्र किनारे टहलते रहे। फिर सभी छात्रों ने फोटो लीं और कुछ समय विश्राम किया।

❖ **होटल वापसीः–** लगभग 9:00 बजे हम होटल वापस लौटे। वहां नाश्ता किया और आगे की यात्रा की तैयारी की।

❖ **होटल से प्रस्थानः–** नाश्ते के बाद 10:30 बजे हम ऑटो द्वारा होटल से इंदिरा गांधी जूलॉजिकल पार्क के लिय रवाना हुये। हम 10:45 बजे इंदिरा गांधी जूलॉजिकल पार्क पहुंचे। सुबह 11:00 बजे से दोपहर 3:30 बजे तक पार्क भ्रमण किये।

इंदिरा गांधी जूलॉजिकल पार्क का विवरणः–

स्थापनाः– 19 मई 1977

क्षेत्रफलः– लगभग 625 एकड़ (253 हेक्टेयर)

नामकरणः– भारत की पूर्व प्रधानमंत्री **श्रीमती इंदिरा गांधी** के नाम पर

विशेषताः– यह भारत के सबसे बड़े और प्राकृतिक आवास–आधारित प्राणी उद्यानों में से एक है, जहाँ जानवरों को खुले और प्राकृतिक वातावरण में रखा जाता है।

विवरणः– इंदिरा गांधी जूलॉजिकल पार्क, विशाखापट्टनम का एक प्रसिध्द और विशाल चिड़ियाघर है। यह पार्क हरे–भरे जंगलों और पहाड़ियों के बीच स्थित है। यह भारत के बड़े जूलॉजिकल पार्कों में से एक माना जाता है।

यहां हमें विभिन्न प्रकार के वन्य जीव, पक्षी, सरीसृप और पेड़–पौधों को देखने का अवसर मिला। जानवरों को प्राकृतिक वातावरण में रखा गया है, जिससे उनका जीवन सुरक्षित और स्वस्थ रहता है।

यहां हमने बहुत सारे जानवर देखें जिसमें से कुछ प्रमुख जानवर हैं– शेर, बाघ, हाथी, भालू, हिरण, विभिन्न प्रजाति के बंदर, विभिन्न रंग–बिरंगे पक्षी एवं तितलियाँ। पार्क में अलग–अलग जानवरों के अलग–अलग घेरे (दीवार) बनाये गये हैं। हर जानवर के घेरे के सामने जानवरों से संबंधित जानकारी लिखी हुई थी, जिससे हमें उनके जीवन, भोजन और आदतों से संबंधित जानकारी मिली।

पार्क का वातावरण बहुत शांत, स्वच्छ और प्राकृतिक था। यहां घूमते समय हमें प्रकृति के बहुत करीब होने का अनुभव हुआ। यह भ्रमण ज्ञानवर्धक होने के साथ–साथ मनोरंजक भी था।

शैक्षणिक महत्वः– यह जूलॉजिकल पार्क छात्रों के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि इससे हमें जैव–विविधता के बारे में जानने को मिला, वन्य जीवों के संरक्षण का महत्व समझ में आया और प्रकृति के प्रति हमारी जागरूकता बढ़ी।

❖ **दोपहर का भोजनः–** पार्क में भ्रमण के दौरान हमने दोपहर 1:00 बजे पार्क में स्थित एक होटल से खाना लिया और एक स्थान पर बैठकर दोपहर के भोजन का आनंद लिया। भोजन के बाद थोड़ी देर विश्राम करके हम पुनः पार्क का भ्रमण करने लगे।

पार्क के कुछ जीव–जंतुओं की तस्वीरें:–

FLYING JEWELS OF INDIRA GANDHI ZOOLOGICAL PARK, VISAKHAPATNAM

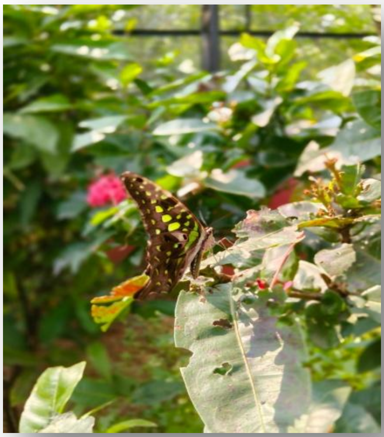

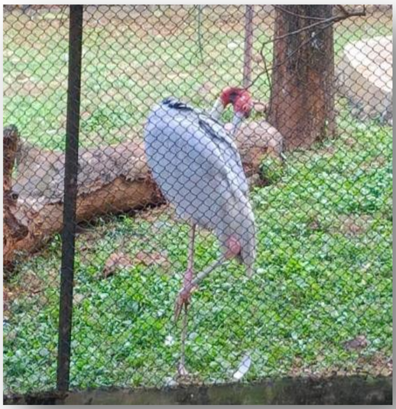

❖जूलॉजिकल पार्क से सिम्हाचलम मंदिर की यात्राः– 3:30 बजे तक हमने

पार्क का भ्रमण पूरा किया और हम पार्क से सिम्हाचलम मंदिर के लिये निकले। ऑटो से शहर का नज़ारा देखते हुए हम सिम्हाचलम मंदिर के निचले परिसर तक पहुंचे। यहां से ऊपर मंदिर तक जाने के लिए आंध्रप्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम(APSRTC) की बसें चलती है। हमने भी APSRTC की बस सेवा का उपयोग किया। शहर के आकर्षक नज़ारों और प्रकृति की सुंदरता को देखते–देखते हम कब मंदिर पहुंचे पता ही नहीं चला।

सिम्हाचलम मंदिर का विवरणः–

पूरा नामः– श्री वराह लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर

स्थानः– विशाखापट्टनम, आंध्रप्रदेश

स्थापनाः– इस मंदिर की मूल स्थापना प्राचीन काल में मानी जाती है। वर्तमान भव्य मंदिर का पुनर्निर्माण 11वीं–12वीं शताब्दी के पूर्वी गंग वंश के शासकों द्वारा कराया गया।

विषेषताएँः–

- यहां भगवान नरसिंह की प्रतिमा वराह और लक्ष्मी के साथ संयुक्त रूप में विराजमान है।
- प्रतिमा को साल भर चंदन से ढका जाता है।
- अक्षय तृतीया के दिन चंदन हटाकर वास्तविक रूप के दर्शन कराये जाते हैं, जिसे चंदन यात्रा कहते हैं।
- मंदिर सिंहाचलम पहाड़ों पर स्थित है, इसलिए यहां से शहर का सुंदर दृश्य दिखाई देता है।
- वास्तुकला के द्रविड़, कलिंग, ओड़िया और चालुक्य शैली का मिश्रण देखने को मिलता है।

❖ **सिंहाचलम मंदिर दर्शनः—** शाम 4:30 बजे हम पहुंचे जहां हमने श्री वराह लक्ष्मी नरसिंह स्वामी के दर्शन किये। मंदिर परिसर में शांति और पवित्रता का अनुभव हुआ। चंदन से ढकी भगवान की प्रतिमा और मंदिर की प्राचीन वास्तुकला ने हमें प्रभावित किया। यहां दर्शन कर मन में श्रध्दा, शांति और अत्यधिक आनंद की अनुभूति हुई। लगभग 6:30 बजे हम मंदिर से नीचे उतरे। यह यात्रा हमारे लिये अत्यंत यादगार और प्रेरणादायक रही।

सिंहाचलम मंदिर—पहाड़ी से दृश्य

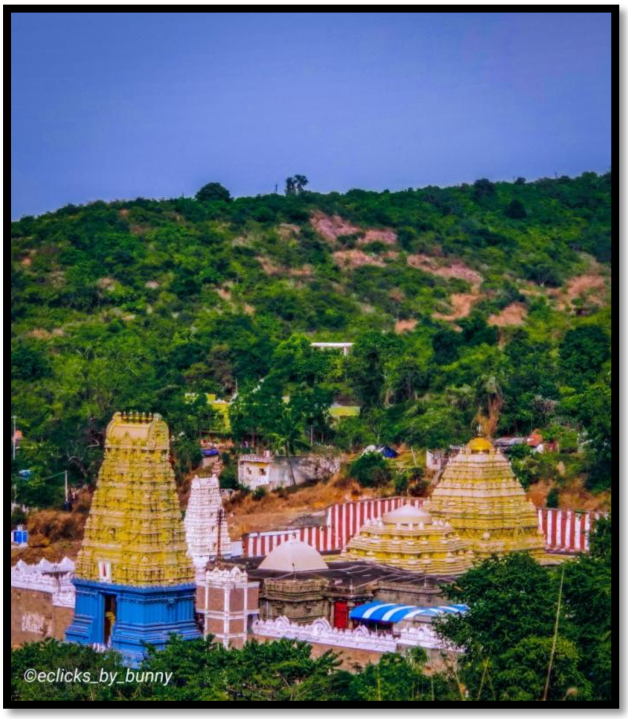

मुख्य प्रवेश द्वार(गोपुरम)

प्राकृतिक वातावरण के साथ मंदिर

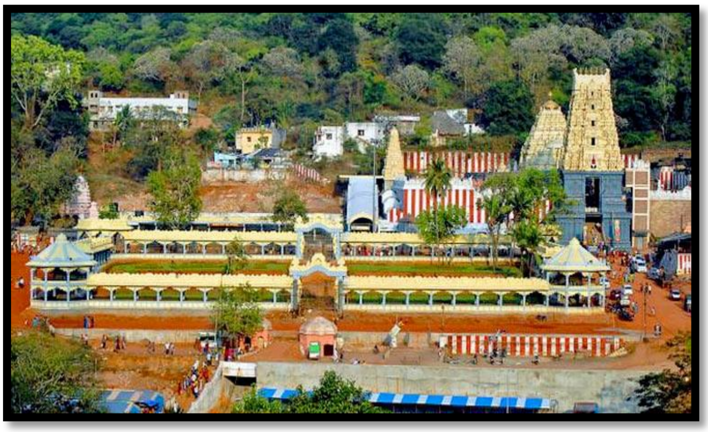

मंदिर परिसर और वास्तुकला

❖**रात्रि का कार्यक्रमः–** मंदिर के दर्शन के पश्चात् हम ऑटो द्वारा लगभग 8:30 बजे रेलवे स्टेशन पहुंचे। वहां हमने रात्रि का भोजन कर, थोड़ी देर विश्राम किया।

हमारी ट्रेन रात 9:10 बजे निर्धारित थी। हम विशाखापट्टनम रेलवे स्टेशन से ट्रेन द्वारा रायपुर के लिये रवाना हुए। रात्रि यात्रा के दौरान तथा सुबह के समय हमने सहपाठियों के साथ आपसी बातचीत, हँसी–मजाक और गीतों के माध्यम से समय आनंदपूर्वक बिताया, जिससे यात्रा और भी यादगार बन गई। अगली सुबह 7:30 बजे हम रायपुर पहुंचे, वहां हमने सुबह की चाय का आनंद लिया और फिर बस द्वारा 9:30 बजे महाविद्यालय परिसर में सकुशल पहुंचे।

इस प्रकार हमारी संपूर्ण शैक्षणिक यात्रा सुखद अनुभवों के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

रायपुर से कॉलेज वापसी